ISBN : 978-93-81549-93-3

'Education through Self-help is our motto – Karmaveer'

Rayat Shikshan Sanstha's

Chandrabai-Shantappa Shendure College,Hupari,

Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur 416 203 M. S., India.

Re-accredited by NAAC with 'B' Grade, CGPA : 2.66

CONFERENCE PROCEEDING

Two Day International Conference

On

"Business Management, Information System, Social Sciences & Language & Literature : A Need for 2020"

Organized by

Chandrabai-Shantappa Shendure College, Hupari in Collaboration with Shivaji University Commerce and Management Teacher's Association, Kolhapur and BVDU's Institute of Management and Entrepreneurship Development, Pune

On 4th and 5th December, 2015

अनुक्रम

1.	वैश्वीकरण के दौर में बदलते स्त्री–पुरुष संबंध (मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. नारायण विष्णु केसरकर	1
2.	आदिवासी केंद्रित हिंदी कविता : वैश्वीकरण और विस्थापन	प्रा.डॉ.पंडित बन्ने	3
3.	'दौड़' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण के विविध आयाम	डॉ. कामायनी गजानन सुर्वे	6
4.	काव्य के आईने में वैश्वीकरण	डॉ. सिद्राम खोत	11
5.	समकालीन हिंदी कविता और भूमंडलीकरण	डॉ. नाजिम शेख	14
6.	राजेश जोशी कृत 'चाँद की वर्तनी' काव्यसंग्रह में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण	प्रा. डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत	16
7.	'भुमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास साहित्य'	लैफटनंट डॉ.रविंद्र पाटील	19
8.	वैश्वीकरण और हिंदी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श	प्रा.डॉ.सौ.सुरैय्या इसुफअल्ली शेख.	21
9.	भूमंडलीकरण का आईना – उपन्यास ''दौड''	प्रा. डॉ. शहनाज महेमुदशा सय्यद	23
10.	हिंदी कविता और भूमंडलीकरण	प्रा.डॉ.सौ.शैलजा रमेश पाटील	28
11.	वैश्वीकरण की सार्थकता का यथार्थ चित्रण-दौड	डॉ.उत्तम लक्ष्मण थोरात	31
12.	साठोत्तरी हिंदी कविता में राजनैतिक चेतना	प्रा. डॉ. आर.पी.भोसले	33
13.	वैश्विकरण और हिंदी कविता	प्रा. मारूफ मुजावर	34
14.	भूमंडलीकरण और भारतीय शिक्षा व्यवस्था ('और सिर्फ तितली' के संदर्भ में)	प्रा. सचिन मदन जाधव	37
15.	भूमंडलीकरण और हिन्दी कविता	प्रा. अश्विनी श्रीराम परांजपे	39
16.	वैश्विकरण – बाजारीकरण के दौर में बदलते स्त्री पुरूष संबंध (मृदुला गर्ग कठगुलाब उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	प्रा. अशोक गोंविदराव उघडे	42
17.	हिंदी भाषा का अंतर्राष्ट्रीय स्वरुप–मारीशस का हिंदी भाषा साहित्य	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	45
18.	वैश्वीकरण और हिंदी कहानी (सूर्यबाला के 'मानुश – गंध' कहानी के संदर्भ में)	प्रा. कोळी एस. टी.	47
19.	''वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य''	प्रा. बाबासाहेब तुकाराम साबळे	49
20.	भूमंडलीकरण और हिंदी कविता	प्रा. वर्णेकर एम. व्ही.	52
21.	भूमंडलीकरण का यथार्थ : एक ब्रेक के बाद	श्रीमती नेहा अनिल देसाई	54
22.	भूमंडलीकरण और हिंदी उपन्यास ('रेहनपर रग्घू', 'दौड' उपन्यासों के संदर्भ में)	प्रा. समाधान शिवाजी नागणे	57
23.	पाषाण–युग आतंकवादी गतिविधियों का दस्तावेज	प्रा. आर.बी. भुयेकर	59
24.	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता : एक अनुशीलन	प्रा. रमेश आण्णाप्पा आंदोजी	61
25.	भूमंडलीकरण और हिंदी साहित्य (मिथिलेश्वर जी के उपन्यास में चित्रित सामाजिक संदर्भ)	डॉ. के.बी. भोसले	64
26.	'जागतिकीकरणाचा मराठी साहित्यातील प्रभाव – अरुण काळे यांच्या ' नंतर आलेले लोक ' या कवितासंग्रहाधारे'	प्रा. डॉ. संजय पाटील	67
27.	''जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कविता''	प्रा. डॉ. रमेश पोळ	70
28.	जागतिकीकरणाचा मराठी कादंबरीवरील प्रभाव	प्रा. डॉ. शिवाजी महादेव होडगे	72
29.	जागतिकीकरण आणि मराठी भाषा संवर्धन	डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे	74
30.	जागतिकीकरण आणि मराठी ग्रामीण कादंबरी	प्रा. एकनाथ शामराव पाटील	76

ISBN : 978-93-81549-93-3

राजेश जोशी कृत 'चाँद की वर्तनी' काव्यसंग्रह में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण

प्रा. डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी

प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य में पद्य की एक सुमन्नत और सुदीर्घ परंपरा है। इतिहास इस बात का गवाह है कि आदिकाल,मध्यकाल,आधुनि काल एवं उत्तर आधुनिक काल की कविता ने समाज को केवल साहित्यानंद की गरिमा से ही अभिभूत नहीं किया; बल्कि समाज अधःपतन के कारकों का पर्दाफाश भी किया है। अर्थात हर युग की कविता अपने काल की अच्छाई के साथ–साथ विसंगतियाँ, विद्रूप अमानवीयता का बयान सशक्तता के साथ प्रस्तुत करती आ रही है। समयचक्र के साथ समाज भी बदल रहा है। कई इकाईयों में यह ग शीघ्र तो कईयों में मंथर नजर आती है। विशेषतः वैश्वीकरण के साथ दुनिया में जो कुछ परिवर्तन की लहर आई है उससे भारतीय समा जीवन भी अछुता नहीं रहा है। साहित्य क्षेत्र भी इसे अपवाद नहीं है। यंत्रवत जीवन, अर्थकेंद्रित व्यवहार, भौतिक सुखों की लाल जीवन–मूल्यों की अपेक्षा बाहरी ताकझाक को महत्व आदि जैसे भारतीय समाज जीवन में नजर आते परिवर्तन हिंदी कवियों के काव्य वि ने हैं। अतः इस प्रपत्र में समकालीन हिंदी कवि राजेश जोशी कृत 'चाँद की वर्तनी'(2006)काव्यसंग्रह में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण विवेचन–विश्लेषण किया है।

भूमंडलीकरण : अर्थ एवं स्वरुप –

अंग्रेजी Globalization का हिंदी रुपांतर भूमंडलीकरण है। हिंदी में अंग्रेजी Globalization के लिए भूमंडलीकरण के वैश्वीकरण, विश्वायन,जगतीकरण जैसे शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। भूमंडलीकरण के संदर्भ में संतोष डेहरिया के विचार स्पष्ट वैश्वीकरण विश्व स्तर पर क्रियाशील एक ऐसी प्रक्रिया है जो समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हुए व्यक्तियों को अन्योन्याश्रितता अन्तर्पारस्परिक संबंधों में बाँधती है। यह वैश्वीक स्तर पर आंदोलनों एवं घुलन मिलन की एक प्रक्रिया है।'[1] डेहरिया जी के विचार भूमा सीमा लाँघकर किए जानेवाले व्यवहार का संकेत कराते हैं। डॉ.पंडित बन्ने जी ने वैश्वीकरण के संदर्भ में लिखा है – "आर्थिक, सामा तथा सांस्कृतिक सीमाओं की मर्यादा को हटाकर लेन देन नीति में जिन नियमों को बनाया गया था उसे निकालकर बाहरी खुली लेन दे राष्ट्रों के बीच के आर्थिक तथा व्यापारी निबंध के रुकावट को दूर करना वैश्वीकरण है।"[2] ऊपरोक्त विद्वानों के विचार देखने के भूमंडलीकरण के संदर्भ में मेरी विनम्र धारणा है कि हर दायरे से ऊपर उठकर मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदान– वैश्वीकता का प्रमुख स्वर है। विश्वबाजारवाद का स्वीकार कर हर संभव अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से जूड़ने की प्रक्रिया भूमंडलीकर भारत में वैश्वीकरण की संभावना 1980 में शुरु हुई,जो 1991 में भारत सरकार ने स्वीकृत की खुली अर्थव्यवस्था के कारण उसे अधिक प्राप्त हुई।

'चाँद की वर्तनी'काव्यसंग्रह और भूमंडलीकरण –

आज के युग को जिस तरह मीड़िया का,संगणक का तथा विज्ञापन का युग कहा जाता है उसी तरह बाजार का युग भी है। यह सच्चाई नहीं छिपाई जाती कि जो भारतीय संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम' तत्व पर विश्वास रखती है वह भी भूमंडलीकर युग में बाजार का एक हिस्सा बनी है। बाजार में दो चीजे महत्वपूर्ण होती हैं –बिक्रेता और खरिददार। वैश्वीकरण में रिश्ते–नाते, देशप्रे भावभावनाओं की अपेक्षा रुपया को महत्व आया है। मानवतावाद की अपेक्षा हर संभव अमीर बनने की धारणा मनुष्य को भ्रष्ट बना रही कोरा देशाभिमान एवं संस्कृति अभिमान की भाषा बोलनेवाले नैतिक मूल्यों को कगार पर रखकर सपने बेचनेवाले भूमंडलीकरण का नजर आते हैं –

" पानी को वाटर कहने में डूबने लगती है जिनकी संस्कृति की नब्ज
उन्हें गंगा के साबुन में बदल जाने से कोई एतराज नहीं।
महानुभवों, वो कुछ भी बेच सकते हैं
क्रांतिकारी गीतों का बना सकते हैं पॉप सॉंग
बेच सकते हैं वंदे मातरम् और कॉलगेट की मुस्कान।"[3]

उक्त उदधरण से स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण का परिणाम लगभग हर क्षेत्र में नजर आ रहा है। वैश्वीकरण के चक्काचौंध में वि के साधनों का डंका बज रहा है। पर अमानवीय व्यवहार की बढ़ती तादाद भी चिंता एवं चिंतन का विषय है। व्यक्ति ने यंत्र के बूते जटील कार्य आसान किए हैं। किंतु यंत्र के साथ खेलनेवाला मनुष्य अपने परिवारजनों तथा देशवासियों के साथ यंत्रवत व्यवहार करे संवेदनाहीन होकर अर्थार्जन करेगा और दूसरी ओर देशविकास की बाते करेगा तो उसमें मानवकल्याण की अपेक्षा स्वार्थ नजर आता है। राजेश जोशी ऐसी उपभोक्तावादी संस्कृति पर कोडे फटकार कर मशीनी विकास की अवधारणा पर संदेह व्यक्त करते हैं। आज

 ISBN : 978-93-81549-93-

समस्याओं पर शांत चित्त से विचार कर समाधान ढूंढने का समय आया है। कवि राजेश जोशी सामर्थ्यवान देशों के बीच के बाजारवाद होड़ की ओर इंगित कर विकसनशील तथा अविकसित देशों में परिलक्षित अशांत माहौल को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति का पर्दाफाश करते है परिणामतः आतंकवाद, सांप्रदायिक बलवे, सीमा पर चलते छिपे युद्ध जैसी समस्याओं को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से सहायता कर दुनियाभर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का डंका पीटकर विश्व को अपने इशारे पर नचाने की मानसिकता मानव सभ्यता पर कलंक है। कवि बलशाली रा की पोल खोलते हुए लिखते हैं –

" मैं कहता हूँ बहुत हानिकारक है
दिनोंदिन बढ़ते जाना अमेरिका का दबाव राष्ट्रवाद का नया उफान
वित्त पूँजी का प्रपंच बजरंगियों का उत्पात बहुराष्ट्रीय कंपनियों का
लगातार फैलता जाल ।"[7]

इससे अधोरेखित होता है कि भूमंडलीकरण पर अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रभाव है। कवि रा जोशी भूमंडलीकरण के कारण निर्माण विसंगतियों पर कोड़े फटकारते हैं। वैश्वीकरण में विश्वबाजारवाद के चलते मंहगाई कम होनी चा मात्र मानवी जीवन के लिए आवश्यक पेयजल भी जब खरिदफरोख्त की वस्तु बनता है तब भूमंडलीकरण का असली चेहरा सामने आता कवि अपनी 'किस्सा उस तालाब का ' कविता में लिखते हैं –

" वह फकत पानी नहीं था
कि जिसे पी पीकर किसी को कोस लेता
उससे मुँह धोना संभव न था न कुल्ला करना
वह खरिदा हुआ था और मंहगा भी
उसका हर घूँट हलक से उतरते हुए
एक सिक्के की तरह बजता था "[8]

इससे स्पष्ट है कि भूमंडलीकरण का लाभ आम लोगों की अपेक्षा व्यावसायिकों तथा उद्योगपतियों को हो रहा है। आम लोगों राहत मिलने की अपेक्षा बढ़ती त्रासदी वैश्वीकरण का काला पक्ष है। बाजारवाद के कारण भाषा एवं संस्कृति में आ रहा खिचड़ापन क भाषासौंदर्य तथा भारतीय संस्कृति की गरिमा को बाधा पहुँचा रहा है।

निष्कर्ष –

हिंदी में अंग्रेजी Globalization के लिए भूमंडलीकरण के साथ वैश्वीकरण, विश्वायन,जगतीकरण जैसे शब्दों का प्रयोग भी जाता है। भूमंडलीकरण के संदर्भ में मेरी धारणा है कि हर दायरे से ऊपर उठकर मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक तथा स तिक आदान–प्रदान वैश्वीकता का प्रमुख स्वर है। विश्वबाजारवाद का स्वीकार कर हर संभव अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से जूड़ने की प्र भूमंडलीकरण है।समकालीन कवि राजेश जोशी जी ने अपने 'चाँद की वर्तनी'(2006)काव्यसंग्रह में भूमंडलीकरण से आहत भारतीय समाज चित्रण बखूबी से किया है। वैश्वीकरण में रिश्ते–नाते,देशप्रेम एवं भावभावनाओं की अपेक्षा रुपया को अधिक महत्व है। परिणामतः मानवत की अपेक्षा हर संभव अमीर बनने की धारणा मनुष्य को भ्रष्ट बना रही है। वैश्वीकरण के चक्काचौंध में विकास के साधनों का डंका बज है;पर अमानवीय व्यवहार की बढ़ती तादाद भी चिंता एवं चिंतन का विषय है। कहना सही होगा कि भूमंडलीकरण के युग में विकास के कलकारखाने तो शुरु हुए पर अमीर और गरीब के बीच का अंतर कम नहीं हुआ है। कवि ने ईमानदार एवं श्रमजीवी की अपेक्षा धोखे और भ्रष्ट को मिलता सम्मान एवं रुपया, ईमानदार और बेईमान आदमी की संदेहभरी जिंदगी, बढ़ते प्रौद्योगिकीकरण से निर्माण प्रदूषण समस्या, विलुप्त हो रही विभिन्न प्रजातियाँ ,सामर्थ्यवान देशों के बीच की बाजारवाद की होड़, बाजारवाद के कारण भाषा एवं संस्कृति रहा खिचड़ापन तथा विसंगतियों का सच बयान कर भूमंडलीकरण का असली चेहरा प्रस्तुत किया है।

संदर्भ संकेत –

1.सं.डॉ.ललिता राठोड, 21 वीं शती का वैश्वीक हिंदी साहित्य, पृ.126
2.डॉ. पंडित बन्ने, आधुनिक हिंदी साहित्यः विविध परिदृश्य, पृ.30
3.राजेश जोशी, चाँद की वर्तनी , पृ.91
4. वही,पृ.57
5. वही, पृ.20
6. वही, पृ.17
7. वही, पृ.91
8. वही, पृ.26

Education through self-helf is our motto
- Karmaveer

Chandrabai-Shantappa Shendure College
Hupari

CERTIFICATE

This is to certify that Dr./Shri/Smt. प्रा.डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत of चंद्राबाई-शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज, हुपरी, जि. कोल्हापूर participated and presented paper on कवि राजेश जोशी कृत 'चाँद की वर्तनी' काव्यसंग्रह और भूमंडलीकरण in the International Conference on "Business Management, Information System, Social Sciences & Language & Literature: A Need for 2020", organised by Department of Commerce, Chandrabai-Shantappa Shendure College, Hupari, Kolhapur, MS; India in collaboration with BVDU's Institute of Management and Entrepreneurship Development, Pune, MS; India and Shivaji University Commerce and Management Teachers Association; Kolhapur, MS; India during 4th & 5th December, 2015 at Hupari, Kolhapur, MS, India.

32

BHARATI VIDYAPEETH DEEMED UNIVERSITY
IMED
INSTITUTE OF MANAGEMENT AND ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT

Reg. No. 19172 Dt. 6-12-2003
SHIVAJI UNIVERSITY COMMERCE AND MANAGEMENT TEACHERS ASSOCIATION, KOLHAPUR, MS, INDIA

Dr. V. A. Mane Convener, CSS College, Hupari	Dr. A. M. Gurav President, SUCOMATA, Kolhapur	Dr Sachin Vernekar Dean & Director, IMED, Pune	Dr. T. S. Patil Principal, CSS College, Hupari